दैनिक भास्कर 09/10/2022

केहु न सुनी रे पुकार; मुक्ति नाटक में लड़की की बोली लगाने की परंपरा पर किया कटाक्ष

जीएमएन कॉलेज में थिएटर वर्कशॉप के समापन पर बिहारी भाषा में किया नाटक का मंचन

भास्कर न्यूज | अम्बाला

कला एवं सांस्कृतिक कार्य विभाग हरियाणा सरकार की तरफ से शनिवार को जीएमएन कॉलेज में थिएटर वर्कशॉप का समापन समारोह हुआ। 18 सितंबर से कॉलेज में थिएटर वर्कशॉप चल रही थी। समापन समारोह में स्टूडेंट्स ने पूर्वांचल शैली के नाटक मुक्ति का मंचन किया। मुख्यातिथि तान्या जीएस चौहान आर्ट एंड कल्चर ऑफिसर थिएटर हरियाणा ने शिरकत की। कार्यक्रम की शुरुआत खुशी, ऋतु और तरुण ने सरस्वती वंदना से की। उसके बाद शुरू हुआ नाटक। नाटक के माध्यम से दिखाया कि किस तरह परंपरा को निभाते हुए पूर्वांचल में लड़की की शादी न करके उसकी बोली लगाई जाती है। वहां की परंपरा पर कटाक्ष किया गया। बिहारी भाषा में किए गए इस नाटक के डायरेक्टर अशोक लहरी, असिस्टेंट डायरेक्टर वरुण गुप्ता, केतन शर्मा और सोहन कुमार थे। इसके म्यूजिक डायरेक्टर अमन और रमन जेडिया रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्राचार्य डा. वीके जैन ने की। डॉ. केके पूनिया विशेष रूप से आमंत्रित थे। मंच संचालन डीन युवा एवं सांस्कृतिक डॉ. राजेंद्र देशवाल ने किया। मौके पर कॉलेज के कोषाध्यक्ष आलोक गुप्ता, डॉ. रितु गुप्ता, डॉ. सरोज, टीएस दुग्गल, नरेश शर्मा व अमरजीत का योगदान रहा।

कैंट के गांधी मेमोरियल नेशनल कॉलेज में आयोजित नाटक को देखते विद्यार्थी व मंचन करते कलाकार।

पिता लगाता है बेटी की बोली और बोली लगाने वाले को पति मान सुक्का उसके साथ चली जाती है : कहानी शुरू होती है एक लड़की सुक्का की कहानी से। उसके पिता उसकी बोली लगा देते हैं। बोली लगाने वाले को पति मानकर सुक्का उसके घर चली जाती है। लेकिन वहां उसके साथ पति मारपीट करता है। जब पति को पता चलता है कि सुक्का को इंद्र नाम के लड़के से प्यार है तो सुक्का की ननद भाभी की इसी कमजोरी का फायदा उठाकर उसे बार-बार जलील करती है। एक दिन सुक्का का प्रेमी इंद्र उसे मिलने घर आता है लेकिन सुक्का उसे पति धर्म में होने के कारण यह कहकर वापस भेज देती है कि उस समय तुम कहा थे जब मेरी बोली लगाई जा रही थी। प्यार था तो मेरी बोली लगाता और मुझे अपनाता। इंद्र के पास कोई जवाब नहीं होता और वो चला जाता है। दूर खड़ी सुक्का की ननद ये सब देख रही होती है और अपने भाई के कान भर देती है कि तेरी बीवी का आशिक आया था, वो उसके साथ भागने वाली थी। गुस्से में सुक्का का पति इंद्र को मारने के लिए जाता है लेकिन मार खाकर अधमरी हालत में वापस आता है। फिर आता है करवाचौथ का दिन। सुक्का पति के लिए व्रत रखती है। जब वो अपने पति की पूजा करने आती है तो गुस्से में उसका पति थाली फेंक देता है और सुक्का को कोसता है कि प्यार इंद्र से और ये पूजा का ढकोसला मुझसे। कहता है तेरी वजह से इस तक्लीफ में हूं अगर तुझे प्रमाणित करना है कि तेरा ये रूप सच्चा है तो मुझे दर्द से निकाल दे। वो घबरा कर अपने पति से कहती है कि ऐसा कैसे हो सकता है। यह मैं नहीं कर सकती लेकिन वो खुद को निर्दोष साबित करने के लिए मजबूरन अपने पति का गला काटकर उन्हें मार देती है। तभी इंद्र आता है तो वो उससे कहती है कि यह सब तेरी वजह से हुआ है और कहते ही उसको भी मार देती है। तब पीछे से इंद्र की आत्मा उससे झकझोरती है कि तूने कैसे अपना सुहाग उजाड़ दिया। इतना कहते ही वह खुद को भी मार देती है। तभी संगीत चलता है...केहु न सुनी रे पुकार।